दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273009

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
फैक्स नं0 : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 25.06.2020

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

दिग्विजयनाथ पी.जी.कालेज में अन्तर्राष्ट्रीय बेविनार का आयोजन

"योग और साधना की वर्तमान संकट का समाधान है" : प्रो.डी.के.सिंह

गोरखपुर 25 जून। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस का आज हमारे वैश्विक समुदाय में पदार्पण हुए छः माह से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। भिन्न–भिन्न देशों के वैज्ञानिकों ने अपने अथक प्रयासों के साथ इससे लड़ने के लिए वैक्सिन निर्माण की प्रकिया आरम्भ के दिनों से ही शुरू कर दी है। यद्यपि इस प्रयास में अभी पूरी तरह से कामयाबी नहीं मिली है। ऐसा लगता है कि इस वायरस के वैक्सिन निर्माण में अभी कुछ वक्त लगेगा हम सभी को इस समय वायरस के संक्रमण के भय के साथ ही अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाना है।

पूरे ब्रह्माण्ड में उर्जा ही ऐसी वस्तु है जिसका आदान–प्रदान होता है सृष्टि सृजन आत्मा–परमात्मा अणु–परमाणु सभी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जुड़े है हम वायरस के संक्रमण से बचने के लिए योग एवं साधना के दम पर हम अपनी शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते है यही इस संक्रमण से बचने का कारगर उपाय है। हमारे भोजन में यदि मसालों एवं लहसून को संतुलित मात्रा में रखा जाय तो हमारे शरीर की प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाती है। इसके वैज्ञानिक प्रमाण भी मिले है। उक्त बातें **दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राणि विज्ञान विभाग, सेवानिवृत्ति आचार्य प्रो.दिनेश कुमार सिंह** ने रसायन विज्ञान विभाग दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में आयोजित त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार **"कोविड–19 के उत्तरजीविता"** के समापन सत्र के प्रथम व्याख्यान में कही।

कोरोना वायरस के संक्रमण से समूचे विश्व में वर्तमान में तनाव का माहौल है यद्यपि आंकड़े ये बताते है इस वायरस से संक्रमित होने वाले व्यक्तियों में मृत्यु दर दो से तीन प्रतिशत ही है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार 55 से 60 प्रतिशत व्यक्ति शीघ्रता से स्वस्थ हो जा रहे है किन्तु मनोवैज्ञानिक रूप से हमारे समाज में सभी व्यक्तियों में इसका भय बना हुआ है। इस भय को दूर करने के लिए हमें अपने मन को नियंत्रित करते हुए सकारात्मक उर्जा के साथ अपने समुदाय में जीना होगा। हम अपने मन मस्तिष्क में यदि वायरस के भय को प्रभावी होने देंगे तो कठिन परिस्थितियां उत्पन्न हो जायेगी हम किसी दूसरे रोग से ग्रसित हो जायेगें। इन्हीं बातों पर प्रकाश डालते हुए **प्रो. शीला सिंह, सेवानिवृत्ति आचार्य, मनोविज्ञान विभाग, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गोरखपुर** ने अपना विचार प्रस्तुत किया।

इस अन्तर्राष्ट्रीय बेविनार में ताइवान, शिकागो, तंजानिया, इथोपिया, डेनमार्क, स्वीडेन, नेपाल से भी लोगो ने प्रतिभाग किया। इस बेविनार के **आयोजन सचिव, डॉ.मनीष श्रीवास्तव** ने प्रस्ताविकी, स्वागत व संचालन किया।

समापन समारोह की **अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ.शैलेन्द्र प्रताप सिंह** ने कहा कि जागरूकता के साथ आत्म निर्भर बनते हुए इस वैश्विक महामारी से हमें निपटना होगा। उन्होंने इस त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय बेविनार में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों एवं व्याख्याताओं के प्रति अपना धन्यवाद ज्ञापन भी दिया।

बेविनार में मुख्य रूप से डॉ.शशि प्रभा सिंह, डॉ. प्रतिमा सिंह, डॉ.राजेश सिंह, डॉ.नितिश शुक्ला, डॉ.आनन्द कुमार गुप्ता, डॉ.पवन पाण्डेय, डॉ.अमरनाथ तिवारी, श्री बृजेश विश्वकर्मा आदि ने सहयोग किया।

डॉ.(शैलेश सिंह)